अमृत वाणी

जो भी आप अपने जीवन में करते हैं, एक दिन वह जरुर खत्म हो जायेगा लेकिन सबसे महत्वपूर्ण यह है की आप कुछ करते तो है। *-महात्मा गाँधी,*

शर्मनाक हरकत

मुंबई में एक के बाद एक जिस तरह की घटनाएं घट रही हैं उससे मुंबई पुलिस से लेकर महाराष्ट्र सरकार की छबि खराब अस्वभाविक नहीं है। पहले सुशांत राजपूत के संदेहास्पद मौत का मामला, फिर बालीवुड अभिनेत्री कंगना रनौत के साथ घटनाएं और अब एक पूर्व नौ सेना अधिकारी पर किए गए अत्याचार की वारदात। पूर्व नौ सेना अधिकारी के साथ सत्तारूढ़ दल के कुछ कार्यकर्ताओं ने जिस तरह से बेरहमी से मारपीट की उसे पूरे देश ने समाचारों में देखा है। एक उम्रदराज व्यक्ति के साथ बिना किसी अपराध के इस तरह का जघन्य व्यवहार बेहद दुखद और शर्मनाक है। उस पर मामले में मुंबई पुलिस का जो रवैया रहा उसे भी कदापि सही नहीं कहा जा सकता।

चिंता की बात तो यह है कि हमारे कुछ राजनीतिक नेता और कार्यकर्ता यह भूल जाते हैं कि भारत एक लोकतांत्रिक देश है और हमारे संविधान के अनुसार इस देश के प्रत्येक नागरिक को अभिव्यक्ति की आजादी है। यह अलग बात है कि अभद्र भाषा या अशालीन शब्दों के प्रयोग की अनुमति किसी को नहीं दी जा सकती मगर इसका तात्पर्य यह तो नहीं कि लोगों से आलोचना का अधिकार ही छीन लिया जाए।

उस नौ सेना अधिकारी का अपराध क्या था। उसने वाट्सएप्प में राज्य के मुख्यमंत्री का एक कार्टून फॉरवर्ड किया था। कार्टून तो होते ही आलोचनात्मक प्रतीक। अगर कोई सकारात्मक सोच वाला व्यक्ति चाहे तो आसानी से उसका बेहतर उपयोग कर सकता है। दुख की बात यह है कि हमारे देश में अक्सर ऐसी घटनाएं देखी जा रही है कि किसी बड़े नेता का आलोचना करने वाला चाहे व्यक्ति हो या मीडिया उसके खिलाफ प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष कार्यवाही होते वक्त नहीं लगता। एक राजनीतिक दल या सरकार की ऐसी किसी कार्यवाही का दूसरे दल की सरकार या नेता विरोध करें यह कोई असामान्य बात नहीं है लेकिन वास्तव में यह सबकुछ भारतीय लोकतंत्र के लिए अत्यंत निराशाजनक स्थिति है। इसके खिलाफ देश को जागना होगा और यह जताना होगा कि कोई भी नेता या सरकार लोकतंत्र और संविधान के प्रावधानों के ऊपर नहीं है। अगर किसी की छबि अच्छी और सम्मानीय है तो उसे किसी एक दो के आलोचना की परवाह ही नहीं होनी चाहिए बल्कि उन्हें अपने अच्छे कर्मों से हजारों की वाहवाही पर ध्यान देना चाहिए। इससे उनकी शान तो बढ़ेगी ही आलोचक का मुंह भी अपने आप बंद हो जाएगा। अन्यथा ऐसे छोटे छोटे मामलों में अप्रत्यक्ष दखलदांजी के द्वारा अपने पैरों पर कुल्हाड़ी वे स्वयं ही चला बैठते हैं।

राफेलः क्षेत्र में शक्ति संतुलन बदलने की अद्भुत ताकत

वायुशक्ति की क्षमता को मिली बेमिसाल मजबूती

पिछले दिनों फ्रांस से भारत आए पांचों राफेल आखिरकार 10 सितम्बर को औपचारिक रूप से वायुसेना की 17वीं स्क्वाड्रन गोल्डन ऐरो में शामिल होकर भारतीय वायुसेना का अहम हिस्सा बन गए हैं और अब किसी भी मोर्चे पर तैनात होने के लिए पूरी तरह तैयार हैं। इस समय भारत पूर्वी लद्दाख में चीन के साथ गंभीर सीमा विवाद में उलझा है और ऐसे में दुनिया के बेहतरीन लड़ाकू विमानों राफेल के वायुसेना में शामिल होने से भारत की वायुशक्ति की क्षमता को बेमिसाल मजबूती मिली है। फ्लाईपास्ट के दौरान भारतीय वायुसेना के बाहुबली राफेल ने दुश्मनों को अपनी ताकत का अहसास कराते हुए दिखाया कि वह न केवल तेज गति से उड़ान भरकर दुश्मनों पर टूट सकता है बल्कि कम स्पीड में भी उड़ान भर सकता है। पूर्व वायुसेना प्रमुख बीएस धनोआ के अनुसार राफेल ने वायुसेना को हमारे विरोधियों पर जबरदस्त बढ़त दी है।

अम्बाला एयरबेस पर राफेल के राजतिलक समारोह में रक्षामंत्री राजनाथ सिंह के अलावा फ्रांसीसी रक्षामंत्री फ्लोरेंस पार्ले, सीडीएस बिपिन रावत, एयर चीफ मार्शल आरकेएस भदौरिया सहित कई बड़े अधिकारी शामिल थे। इस अवसर पर राफेल की विशेषताओं के बारे में फ्रांसीसी रक्षामंत्री फ्लोरेंस पार्ले का कहना था कि राफेल को ध्वजा का झोंका कह सकते हैं लेकिन युद्ध के मैदान में इसका मतलब आग बरसाने वाला है। समारोह में राजनाथ सिंह ने चीन से तनाव के दौर में चेतावनी भरे दो टूक शब्दों में कहा कि वायुसेना में राफेल का शामिल होना पूरी दुनिया को एक बड़ा और कड़ा संदेश है, खासकर उनके लिए जो हमारी सम्प्रभुता पर नजर रखते हैं। उनके मुताबिक चीन से तनाव को देखते हुए राफेल लड़ाकू विमानों को सूचना मिलने पर बेहद कम समय में ही वहां तैनात किया जा सकता है। रक्षामंत्री के अनुसार भारत की जिम्मेदारी उसकी क्षेत्रीय सीमा तक ही सीमित नहीं है बल्कि वह हिंद.प्रशांत और हिंद महासागर क्षेत्र में शांति एवं सुरक्षा के लिए भी प्रतिबद्ध है। ये दोनों क्षेत्र वही हैं, जहां चीन अपनी सैन्य आक्रामकता बढ़ा रहा है।

राफेल को भारतीय वायुसेना के लिए इसलिए बेहद महत्वपूर्ण माना जा रहा है क्योंकि यह क्षेत्र में शक्ति संतुलन को बदलने की अद्भुत ताकत रखने वाला लड़ाकू विमान है। दरअसल रक्षा विशेषज्ञों के मुताबिक ऐसी दक्षता और बेजोड़ इलैक्ट्रॉनिक युद्धक प्रणाली वाले विमान किसी भी पड़ोसी देश के पास नहीं हैं। राफेल चीन के बहुचर्चित लड़ाकू विमान जे.20 से भी कई कदम आगे है। पाकिस्तान का एफ16 भी राफेल के सामने कहीं नहीं ठहरता। रक्षा विशेषज्ञ कहते हैं कि इनकी तुलना राफेल से नहीं की जा सकती क्योंकि राफेल विमान इन लड़ाकू विमानों की तुलना में ज्यादा दक्ष हैं। चीनी जे.20 का मुख्य कार्य स्टील्थ फाइटर का है जबकि राफेल को कई कार्यों में लगाया जा सकता है। हैमर मिसाइलों से लैस राफेल ओमनी.रोल विमान है अर्थात् यह एक बार में कम से कम चार मिशन कर सकता है। जे.20 की बेसिक रेंज 1200 किलोमीटर है, जिसे 2700 किलोमीटर तक बढ़ाया जा सकता है। करीब 35 हजार वजनी जे.20 की लंबाई 20ण्5 मीटर, ऊंचाई 4ण्45 मीटर और विंगस्पैन 12ण्88.13ण्50 मीटर के बीच है अर्थात् यह राफेल से बड़ा और भारी है। राफेल की लम्बाई 15ण्3 मीटर और ऊंचाई 5ण्3 मीटर है जबकि इसके विंग्स की लम्बाई 10ण्9 मीटर है। राफेल की मारक क्षमता 3700 किलोमीटर तक है। पाकिस्तान के पास मौजूद जेएफ17 में चीन ने पीएफ15 मिसाइलें जोड़ी हैं लेकिन फिर भी यह राफेल के मुकाबले में कमजोर है। राफेल का सबसे खतरनाक हथियार है स्कैल्प पीएल.15 एयरम मिसाइल, जो 300 किलोमीटर तक हमला कर सकती है। हालांकि पाकिस्तान के एफ16 में एयरम मिसाइलें लगी हैं लेकिन वे केवल 100 किलोमीटर तक ही हमला कर सकती हैं।

भारतीय वायुसेना के पास मिराज.2000, सुखोई.30 एमकेआई जैसे आधुनिक विमान भी हैं लेकिन वे तीसरी या चौथी पीढ़ी के विमान हैं जबकि राफेल 4ण्5 जनरेशन का लड़ाकू विमान है, जिसमें आधुनिक हथियारों के प्रयोग के साथ बेहतर सेंसर की भी अत्याधुनिक सुविधा है। वर्ष 2016 में भारत.फ्रांस के बीच 36 राफेल की खरीद के लिए 59 हजार करोड़ रुपये का सौदा हुआ था, जिनमें से 5 राफेल 29 जुलाई को भारत पहुंच गए थे जबकि चार राफेल की अगली खेप के अगले माह आने की संभावना है। सौदे के मुताबिक 2022 तक भारत को सभी 36 राफेल मिल जाएंगे, जिनमें से पहले 18 राफेल अम्बाला एयरबेस में जबकि शेष 18 पूर्वोत्तर के हाशिमारा एयरबेस में तैनात किए जाएंगे। हालांकि पड़ोसी देशों की चुनौतियों का मुंहतोड़ जवाब देने के लिए अभी वायुसेना को अभी ऐसे ही और राफेल विमानों की जरूरत है। सेवानिवृत्त एयर चीफ मार्शल अरूप साहा कहते हैं कि राफेल हवाई क्षेत्र में शक्ति के मामले में वायुसेना की क्षमतओं को बढ़ाने जा रहा है लेकिन देश को कम से कम 126 राफेल विमानों की जरूरत है, जिनकी कल्पना पहले की गई थी। पूर्व वायुसेना प्रमुख फली होमी मेजर का भी मानना है कि 36 राफेल विमान भारत की हवाई ताकत को तो बढ़ाएंगे लेकिन कम से कम दो और स्क्वाड्रन होने से देश की वायु प्रभुत्व क्षमता काफी मजबूत होगी।

हवा से हवा तथा हवा से जमीन पर मिसाइल हमलों के लिए बहुआयामी भूमिकाएं निभाने के लिए राफेल को भारतीय वायुसेना की जरूरतों के हिसाब से परिकृत किया गया है। यह हवाई हमला, वायु वर्चस्व, जमीनी समर्थन, भारी हमला, परमाणु प्रतिरोध इत्यादि कई प्रकार के कार्य बखूबी करने में सक्षम है। इसमें उन्नत हथियार, उच्च तकनीक सेंसर, लक्ष्य का पता लगाने और ट्रैकिंग के लिए बेहतर रडार और प्रभावशाली पेलोड ले जाने की क्षमता है। परमाणु बम गिराने की ताकत से लैस राफेल में इजरायल हेलमेट.माउंटेड डिस्प्ले, रडार चेतावनी रिसीवर, लो बैंड जैमर, दस घंटे की उड़ान डाटा रिकॉर्डिंग, इन्फ्रारेड खोज और ट्रैकिंग प्रणाली शामिल हैं। कई शक्तिशाली हथियारों को ले जाने में सक्षम राफेल विमान उल्का बीवीआर एयर.टू.एयर मिसाइल बीवीआरएएम की अगली पीढ़ी है जिसे एयर.टू.एयर कॉम्बैट में क्रांति लाने के लिए डिजाइन किया गया है। राफेल की सबसे बड़ी विशेषता है कि इसमें ऑक्सीजन जनरेशन सिस्टम लगा होने के कारण लिक्विड ऑक्सीजन भरने की जरूरत नहीं पड़ती। अत्यंत घातक हथियारों से लैस ये विमान यूरोपीय मिसाइल निर्माता एमबीडीए द्वारा निर्मित दृश्य सीमा से परे हवा से हवा में मार करने वाली मीटिअर मिसाइल के अलावा स्कैल्प वरूज मिसाइल से भी लैस हैं। राफेल में बहुत ऊंचाई वाले एयरबेस से भी उड़ान भरने की क्षमता है। लेह जैसी जगहों और काफी ठंडे मौसम में भी यह तेजी से कार्य कर सकता है। इसकी विजिबिलिटी 360 डिग्री है, जिसके चलते यह ऊपर-नीचे, अगल.बगल अर्थात् हर तरफ निगरानी रखने में सक्षम है।

राफेल में बैठे पायलट द्वारा दुश्मन की लोकेशन को देखकर बटन दबा देने के बाद बाकी काम इसमें लगे कम्प्यूटर करते हैं। मल्टीमोड रडार से लैस राफेल हवाई टोही, ग्राउंड सपोर्ट, इन.डेप्थ स्ट्राइक, एंटी.शर्प स्ट्राइक और परमाणु अभियानों को अंजाम देने में निपुण है। इसमें लगी मीटिअर मिसाइल सौ किलोमीटर दूर उड़ रहे दुश्मन के लड़ाकू विमान को भी पलभर में मार गिराने में सक्षम हैं। रक्षा विशेषज्ञों के अनुसार ऐसी मिसाइल चीन.पाकिस्तान सहित समस्त एशिया में किसी भी देश के पास नहीं हैं। यह एक बार में दो हजार समुद्री मील तक उड़ सकता है। हवा से हवा में यह 150 किलोमीटर तक मिसाइल दाग सकता है और हवा से जमीन तक इसकी मारक क्षमता 300 किलोमीटर है। बहरहाल, पाकिस्तान और चीन की ओर से देश की सीमाओं की सुरक्षा को लगातार मिल रही चुनौती के मद्देनजर राफेल भारतीय वायुसेना को अभेद्य ताकत प्रदान करने में अहम भूमिका निभाएंगे।

योगेश कुमार गोयल
(दे लेखक के अपने विचार हैं)

इम्युनिटी बढ़ाने में मददगार है मास्क

कोरोना का खतरा लगातार बढ़ता ही चला जा रहा है। इससे बचाव के लिए इम्युनिटी का मजबूत होना जरूरी है। अगर इम्युनिटी कमजोर हो तो कई तरह के वायरस हमला करते हैं। कोरोना संक्रमण के इस दौर में मास्क पहनने से इम्युनिटी विकसित हो सकती है। इससे कोविड संक्रमण की रफ्तार कम करने में भी काफी मदद मिल सकती है। ऐसा एक स्टडी रिपोर्ट में कहा गया है। आइये यहाँ हम पहले इम्युनिटी की बात करते है। इम्युनिटी जिसे हम हिंदी में रोग-प्रतिरोधक क्षमता कहते है। स्वास्थ्य विशेषज्ञों के मुताबिक प्रतिरक्षा प्रणाली में अंग,कोशिकाएं, टिशू और प्रोटीन इत्यादि शामिल होते हैं। ये सभी तत्व मिलकर मानव-शरीर को सही तरीके से काम करने में सहायता करते हैं। इसके साथ में प्रतिरक्षा प्रणाली मानव-शरीर को बीमारियों, संक्रमण, वायरस इत्यादि से लड़ने में सहायता करते हैं। इम्युनिटी या रोग प्रतिरोधक क्षमता वह शक्ति है, जो हमें सेहतमंद रखने में सहायता करती है। यह बच्चे से बुजुर्ग तक समस्त लोगों के लिए काफी महत्वपूर्ण है। यह वह चीज है जो किसी भी बीमारी से लड़ने में हमारी मदद करती है। बीमार होने पर डॉक्टर इसे बनाए रखने या फिर बढ़ाने की सलाह देते हैं। बताते है कमजोर इम्युनिटी वाले ईसान को कोरोना वायरस आसानी से अपनी जकड में ले लेता है।

देश और दुनिया में कोरोना से होने वाली बीमारियों और मौतों में इम्युनिटी भी एक कारक मानी जाती है। बाजार में इन दिनों इम्युनिटी की बड़ी डिमांड है। जिगर चाहे मजबूत हो न हो, पर लोग इम्युनिटी मजबूत करने में जी-जान से जुटे पड़े हैं। देश की हालत यह है हर छोटा बड़ा व्यक्ति मुंह पर मास्क बांधे नजर आता है। जिसे देखो वह इम्युनिटी बढ़ाने का नुखा बताता है। अखबारों में इम्युनिटी बढ़ाने की दवाओं के विज्ञापनों की भरमार देखने को मिलती है। ऐसे में मास्क इम्युनिटी बढ़ाने में मददगार है यह सब को सुकून देने वाकई खबर है।

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री हृषवर्धन ने एक बार फिर कहा है अगले वर्ष की शुरुआत में कोरोना वायरस की वैक्सीन भारत बना लेगा। इस पर दुनिया भर में तेजी से काम चल रहा है। कुछ वैज्ञानिकों का मानना है कि कोरोना संक्रमण के इस दौर में मास्क पहनने से इम्युनिटी विकसित हो सकती है। इससे कोविड वायरस संक्रमण की रफ्तार कम करने में भी काफी मदद मिल सकती है। उन्होंने कहा कि मास्क वायरस के संक्रमणकारी हिस्से को फिल्टर कर सकते हैं, लेकिन पूरी तरह नहीं रोक सकते। ऐसे में कोरोना संक्रमण होगा लेकिन वह घातक नहीं होगा। एक तरह से यह भयंकर बुखार के बजाय हल्का बुखार सहने जैसा है। विशेषज्ञों का कहना है कि अगर कोविड इन्फेक्शन की गंभीरता भी वायरल इनोक्युलम पर निर्भर करती है तो फेस मास्क पहनने से इससे बचाव हो सकता है। न्यू इंग्लैंड जर्नल ऑफ मेडिसिन में कैलिफोर्नियां यूनिवर्सिटी की मोनिका गांधी और जॉर्ज रदरफोर्ड ने यह निष्कर्ष निकाला है। उन्होंने कहा कि पहले चेचक की वैक्सीन बनने तक लोग वैरियोलेशन लेते थे। इसमें जिन लोगों को बीमारी नहीं होती थी, उन्हें चेचक मरीजों की पपड़ी के मैटेरियल के संपर्क में लाया जाता था, इससे हल्का इन्फेक्शन होता था लेकिन पूरी तरह बीमारी होने से बचा लेता था। किसी बीमारी की गंभीरता इस बात पर निर्भर करती है कि वायरस का संक्रमणकारी हिस्सा शरीर में कितना पहुंचा है। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार वैज्ञानिकों का मानना है कि कोरोना काल में मास्क पहनने से इम्युनिटी डेवलप हो सकती है और कोविड संक्रमण धीमा हो सकता है। मास्क वायरस के संक्रमणकारी हिस्से को फिल्टर कर सकते हैं लेकिन पूरी तरह नहीं रोक सकते। ऐसे में कोरोना इन्फेक्शन होगा तो जरूर लेकिन वह घातक नहीं होगा। एक तरह से यह भयंकर बुखार के बजाय हल्का बुखार सहने जैसा है।

बाल मुकुन्द ओझा
(दे लेखक के अपने विचार हैं)

कितने किस्म के हिन्दू

पितृपक्ष चल रहा है। सत्रह सितम्बर बृहस्पतिवार को श्राद्ध का अंतिम दिन रहेगा। गंगाजमुनी हिन्दू इस प्रथा का उपहास करते हैं। छद्म आस्थावान छिपे.सहमे रीति से परिपाटी निभाएंगे। कई श्रद्धालु एक दफा जीवन में गया.तीर्थ जाने के बाद निबट जाते हैं। किन्तु बहुतायत में अन्य जन सारी रस्में मन से निभाते हैं। इसी आखिरी समूह का तरीका मुझे बहुत भाता है।

पुरखों का आदर मरणोपरांत भी करना यह दर्शाता है कि नयी पीढ़ी कृतघ्न नहीं है। ऐसे मृत्यु के पश्चात वाले आचरण हमें सूर्योपासक पारसियों, ख्रिस्तोजन, जैन तथा बौद्धों से सीखना चाहिए। वे अपने सभी निर्देशित रस्मों का विधि.विधान के अनुसार निर्वहन करते हैं।

अर्थात पुण्यकर्म से लाज, हिचक क्यों?

यहीं चौथे मुग़ल बादशाह शाहाबुद्दीन मुहम्मद शाहजहाँ खुर्रम की उक्ति का जिक्र कर दूं। श्राद्ध पद्धति का उल्लेख अतीव व्यथा से शाहजहाँ ने किया था। अपने बेटे औरंगजेब आलमगीर से बादशाह ने कहाए हिन्दुओं से सीखो। वे अपने मरे हुए वालिद पिता को भी तर्पण में पानी पिलाते हैं और तुम हो कि अपने जीवित पिता को टूटे घड़े में आधा भरकर ही पानी देते हो, प्यासा रखते हो! बाप से बेटे ने गद्दी हथियाते ही आगरा के किले में बादशाह को कैद कर रखा था।

मसलन पारंपरिक रिश्ते निभाने में हिन्दू को शहंशाह ने बहुत बेहतर बताया था। आर्यसमाजी भी हिन्दुओं में होते हैं जो मूर्ति.भंजक इस्लामिस्टों की भाँति बुतशिकन हैं। वे श्राद्ध का बहिष्कार करते हैं। हालांकि वे वेदोक्त रीतियों को तो मानते हैं। मगर यह नहीं स्वीकारते कि अथर्ववेद 18.2.49 में उल्लिखित है कि पूर्वजों का स्मरण करना चाहिए येनः पितु पितरो ये पितामहा तेभ्यः पितृभ्यो नमसा विधेम।ए

हिन्दू संप्रदाय के समाजशास्त्रीय प्रबंधन हेतु यह प्रथाएं रची गई थीं। किन्तु नौ सदियों तक के इस्लामी राज में नगरीय क्षेत्रों से ये परम्पराएँ लुप्तप्राय हो गयी हैं। आंचलिक क्षेत्रों में दिखती हैं।

पिण्डदान के विषय में कई भारतीयों के भ्रम को दूर करने हेतु मैं लन्दन के एक महान वैज्ञानिक का अनुभव बता दूं। चूँकि वह गोरा अंग्रेज था तो हम गेहूंए भारतीय युगों से दासता से ग्रसित रहेए तो शायद विचार करलें और मान भी लें कि आत्माएं होती हैं और विचरण करती रहती हैं। उनसे संवाद संभव है। आत्मिक सुधार हेतु सहायता भी।

इसी सन्दर्भ में लखनऊ विश्वविद्यालय में साइकोलॉजी विभाग के हमारे एक साथी ने कभी ;1959 एक लेख का उल्लेख किया जिसे ब्रिटेन के महान भौतिक शास्त्री लार्ड जॉन विलियम्स स्टट रेले ने लिखा था। जॉन विलियम्स को 1904 में भौतिकी का नोबेल पुरस्कार मिला था। वे बड़े धर्मनिष्ठ थे और पराविज्ञान में निष्णात थे। प्लैशेट पर वे बहुधा अपने दिवंगत इकलौते पुत्र से संवाद करते थे। एक बार पुत्र ने उन्हें बताया कि वह एक अत्यंत ज्वलनशील स्थान पर है। मगर भारतीय आत्माएं यहाँ से शीघ्र मुक्ति पा लेती थीं क्योंकि उनके भूलोकवासी रिश्तेदार आटे से गेंदनुमा ग्रास बनाकर कोई रस्म अदा करते थे। अर्थात पिंडदान ही रहा होगा। अतः अब श्राद्ध प्रथा में यकीन करना होगा।

के विक्रम राव
(दे लेखक के अपने विचार हैं)

क्या हुआ तेरा वादा

आज से करीब साढ़े छः वर्ष पूर्व हमारे प्रधानमंत्री नरेन्द्र दामोदर दास मोदी ने अपने पहले संसदीय भाषण में वादा किया था कि देश में जितने भी मौजूदा व पूर्व संसदों व विधायकों पर न्यायालयों में आपराधिक प्रकरण चल रहे है उनका निपटारा विशेष न्यायालयों का गठन कर एक वर्ष में कर दिया जाएगा और देश की सियासत को अपराध मुक्त कर दिया जाएगा पचहत्तर महीनें बाद भी मोदी जी अपनी इस पहले संकल्प को मूर्तरूप नहीं दे पाए, हमारे प्रधानमंत्री की तो पूरे विश्व में एक सशक्त प्रधानमंत्री की पहचान है और पूरा विश्व इस पहचान का सम्मान भी करता है, फिर क्या कारण है कि प्रधानमंत्री चाहते हुए भी अपने पहले संकल्प को मूर्तरूप नहीं दे पाए और आज देश भर के उच्च न्यायालयों को सर्वोच्च न्यायालय को लिखकर देना पड़ रहा है कि आज भी देश के मौजूदा पूर्व व वर्तमान सांसदों.विधायकों पर करीब साढ़े चार हजार 4442 आपराधिक प्रकरण लम्बित हैए इनमें से आधे से अधिक 2556 आपराधिक प्रकरण मौजूदा सांसदों.विधायकों पर लम्बित है। क्या उच्च न्यायालयों की इस खुली रिपोर्ट से हमारा प्रजातंत्र कलंकित नहीं होता और यदि अभी कुछ वर्ष और यही चलता रहा तो फिर क्या यह लोकतंत्र सुरक्षित रह पाएगा

शायद इसी कारण हमारे निर्वाचित जन प्रतिनिधि जिनके बारे में संवैधानिक धारणा एक जनसेवक की हैए उनसे वे ही लोग हमेशा भयभीत रहते है जिनके मतों से ये आपराधिक तत्व राजनीति में रूतबें के सिंहासन तक पहुंचे इस मामले में प्रजातंत्र का हर स्तंभ डरा.सहमा सा है क्योंकि इनका सतत् प्रयास हर स्तंभ पर कब्जा करना हो गया है विधायिका के तो ये सदस्य है ही कार्यपालिका इनके नियंत्रण में रहती है और सिर्फन्यायपालिका ही है जिस पर इनका जोर नही चल पाता इसलिए तीनों स्तंभों में न्यायपालिका पर ही देश की जनता का भरोसा रह गया है और चैथें अघोषित स्तंभ खबर पालिका की तो बात ही नहीं करें वह तो स्वयं इन आपराधिक जन प्रतिनिधियों के नियंत्रण में रहने को उत्सुक है। कुल मिलाकर आज.कल प्रजातंत्र की मुख्य धुरी चुनाव भी तमाशा बनकर रह गए है आज चुनाव किस तरह जीते जाते है यह किसी से भी छुपा हुआ नहीं है आपराधिक तत्वों के प्रति चुनाव आयोग न तो सख्ती कर पाता है और न उन्हें चुनाव लड़ने से वंचित ही कर पाता है इसलिए ऐसे तत्व भय व डर के बल पर चुनाव जीतकर हमारे पवित्र प्रजातंत्र के मंदिरों संसद.विधानसभा में पहुंच जाते है और अपनी हर महत्वाकांक्षा की पूर्ति उसी हैसियत का दुरूपयोग कर करते है फिर वह चाहे धनोपार्जन हो या रूतबा।

आज हमारी आजादी को तिहत्तर साल होने आए और संविधान को लागू हुए 70 साल से अधिक हो गए और हमारे संविधान में स्पष्ट रूप से हमारे प्रजातंत्र के इन मंदिरों को अपराध और आपराधिक तत्वों से दूर रखने का उल्लेख हैए किंतु इसके बावजूद क्या कारण है कि हमारा चुनाव आयोग स्वयं ही संविधान की भावना का सम्मान नहीं कर पा रहा है क्या चुनाव आयोग जैसे संवैधानिक संगठन पर भी सत्ता के सिंहासनों पर विराजित ये तत्व हावी हो गए है इसी एक कारण से हमारे प्रजातंत्र की छवि पूरे विश्व में कितनी खराब हो रही है इसकी तनिक भी चिंता हमारे इन कलयुगी भाग्य विधाताओं को है चुनाव आयोग हर चुनाव के पहले राजनीतिक दलों का इस बारे में आगाह करता रहता है किंतु राजनीतिक दलों पर उसका कोई असर नहीं होता। अब तो सर्वोच्च न्यायालय को ही कुछ करना पड़ेगा तथा चुनाव आयोग के नियमों के साथ यह जोड़ना पड़ेगा कि जिन प्रत्याशियों के यदि किसी भी न्यायालय में कोई आपराधिक प्रकरण लम्बित है तो उसे चुनाव लड़ने से वंचित कर दिया जाए जब तक वह सभी प्रकरणों में निर्दोष साबित न हो जाए तब तक वह पंचायत से लेकर संसद तक कोई चुनाव नहीं लड़ सकता अब समूचे देश की निगाहें सुप्रीम कोर्ट पर ही केन्द्रित है जिसने पूरे देश के उच्च न्यायालयों से यह रिपोर्ट प्राप्त की है साथ ही स्वयं प्रधानमंत्री को भी अपनी प्राथमिकताओं में अपने इस संकल्प को मूर्तरूप देने वाले इस पुनीत कार्य को शामिल करना चाहिए जिससे कि अन्य मुद्दों के साथ प्रजातंत्र की अस्मिता से जुड़ा यह मामला भी सुलझ सके और उनकी पहली संकल्पित घोषणा को मूर्तरूप मिल सके।

ओमप्रकाश मेहता
(दे लेखक के अपने विचार हैं)

राज-काज

अर्थव्यवस्था की सोचे सरकार

मूडीज और फिच के बाद एशियाई विकास बैंक एडीबी ने भी चालू वित्त वर्ष में भारतीय अर्थव्यवस्था में नौ फीसदी की गिरावट का अनुमान लगाया है। कोरोना वायरस की वजह से आर्थिक गतिविधियां बुरी तरह प्रभावित हुई हैं। इसका असर उपभोक्ता धारणा पर भी पड़ा है, जिससे चालू वित्त वर्ष में जीडीपी में नौ फीसदी की गिरावट आएगी। आर्थिक मोर्चे को लेकर जो अनुमान मिल रहे हैं, उस पर सरकार ध्यान दे।

प्याज की कीमतें

महंगाई पहले से ही लोगों को परेशान किए है। अब प्याज के महंगी होने की खबर आ गई है। प्याज जब.तब लोगों के आंसू निकालती रही है। कोरोना काल में लोगों की जेब खाली है, ऐसे में प्याज की कीमतों पर तत्काल रोक नहीं लगाई गई तो हालत खराब हो जाएगी। हालांकि सरकार ने प्याज के निर्यात पर प्रतिबंध लगाया है। मगर इतना ही काफी नहीं होगा। प्याज की कालाबाजारी करने वालों पर भी नकेल कसनी जरूरी है।